International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070, Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 16-02-2021, Accepted: 03-03-2021, Published: 08-04-2021
Volume 7, Issue 2, 2021, Page No. 59-62

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर का उनकी शैक्षिक चिन्ता एवं निवास के संदर्भ में अध्ययन।

डॉ. नीलम कुमारी[1], बृजपाल सिंह[2]
असि0 प्रो0, शिक्षा संकाय, एस0 एस0 जे0 कैम्पस, अल्मोडा, कुमांऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखंड, भारत
शोधार्थी, शिक्षा संकाय, एस0एस0जे0 कैम्पस, अल्मोडा, कुमांऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखंड, भारत

सारांश
प्रसन्नता एक ऐसी अनुभूति है जिसका वर्णन हम शब्दों में नहीं कर सकते है यह केवल किसी की मुस्कान की अभिव्यक्ति से महसूस की जा सकती है। हर दिन हम ऐसे लोगो को देखते है और उनसे मिलते है जो बाहर से खुश दिखते है लेकिन अंदर से दुखी होते है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में प्रसन्न रहना चाहता है और निरन्तर इसके लिए प्रयासरत भी रहता है। विद्यार्थी जीवन एक ऐसा जीवन है जिसमें व्यक्ति के ऊपर पारिवारिक एवं सामाजिक जिम्मेदारियॉ कम तथा शैक्षिक जीवन के प्रति उसकी जिम्मेदारियां अधिक होती है। इस जीवन में यदि वह प्रसन्न नहीं है तो इसका प्रभाव उसके निर्णयो एवं भावी जीवन पर भी अवश्य होगा। वर्तमान समय में विद्यार्थियों का जीवन, तनाव, अस्थिरता, कुण्ठा आदि से भरा हुआ है, जोकि उनके द्वारा अनुशासनहीनता, आक्रमकता आदि के रूप में परिलक्षित होता है। वर्तमान शोध में शोधार्थी ने उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर को जानने हेतु अध्ययन का चयन किया। अध्ययन का उददेश्य उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर का उनके शैक्षिक चिन्ता एवं निवास के संदर्भ में अध्ययन करना है। अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है। न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा अल्मोडा जनपद के 6 विकासखण्डों के अर्न्तगत 25 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से 546 ग्रामीण तथा 304 शहरी विद्यार्थियों का चयन किया गया है। प्रस्तुत प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, पिर्यसन सहसम्बंध एवं द्विमार्गीय प्रसरण विश्लेषण का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष में पाया गया कि उच्चतर माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है किन्तु निवास एवं शैक्षिक चिन्ता के मध्य अन्तः क्रिया के कारण प्रसन्नता स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया है।

मूल शब्दः प्रसन्नता स्तर, शैक्षिक चिन्ता एवं निवास स्थान।

प्रस्तावना
विद्यार्थियों पर शिक्षा का दबाव अकादमिक सफलता के उच्च स्तर पर सफलता को प्राप्त करने के लिए उनकी आनन्दोल्लास को खत्म करता जा रहा है और उन्हें दिन प्रतिदिन चिन्ता और निराशा की ओर ले जाता है जिस कारण कई छात्र अपने करियर को लेकर काफी डिप्रेशन में आ जाते है। शिक्षा किसी व्यक्ति की प्रसन्नता को प्रत्यक्षतः गहरे ढंग से प्रभावित करती है। व्यक्ति की आर्थिक, पारिवारिक एवं सामाजिक स्थिति शिक्षा द्वारा अच्छी होती है जिससे उसके अन्दर स्वः प्रसन्नता का भाव उजागर होना स्वाभाविक है। प्रसन्नता या खुशी प्रकृति प्रदत्त है और प्रकृति किसी के साथ भेद–भाव नही करती है। प्रकृति द्वारा प्रदत्त इस उपहार की पहुॅच को सभी तक सुनिश्चित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपने चार्टर में शान्ति, ईंसाफ, मानवाधिकार सामाजिक प्रगति और जीवन का स्तर सुधारने की बात कही है। संयुक्त राष्ट्र का मानना है कि इन्ही लक्ष्यों की पूर्ति में प्रसन्नता का मूल मंत्र छिपा है। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने एक ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित करते हुये सदस्य देशों को अपने नागरिकों की प्रसन्नता स्तर को मापने तथा इसके परिणामो से प्राप्त निर्देशों का उपयोग लोक–नितियों के निर्माण में करने हेतु निर्देशित किया। इस प्रस्ताव का अनुपालन अप्रैल, 2012 मे भूटान के तत्कालीन प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में "खुशी एवं अच्छे रहन सहन" पर आधारित संयुक्त राष्ट्र उच्च स्तरीय सम्मेलन आहूत किया गया था। इस सम्मेलन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर वर्ष 2012 में पहली बार संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट प्रकाशित की और वर्ष 2013 में द्वितीय, वर्ष 2015 में तृतीय रिपोर्ट प्रकाशित हुई जिसमें भारत का स्थान 157 देशों मे से 117 स्थान पर था तथा चौथी रिपोर्ट वर्ष 2016 मे 118 वॉ, 2017 में 122 वॉ, 2018 में 133 वॉ, 2019 में 140 वॉ तथा 2020 में प्रकाशित रिर्पोट में भारत का स्थान 156 देशो में से पिछले वर्ष की तुलना में 4 स्थान नीचे खिसककर 144 वे स्थान पर रहा तथा प्रथम स्थान पर फिनलैण्ड रहा। वर्ल्ड हैप्पीनेस रिर्पोट 2020 में खुशहाल रहने के लिए विशेष रूप से सामाजिक वातावरण पर जोर दिया गया है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा प्रत्येक वर्ष 20 मार्च को विश्व प्रसन्नता दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारत में भी आम लोगों के जीवन में प्रसन्नता लाने पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए एक खुशी विभाग का गठन मध्य प्रदेश सरकार द्वारा 15 जुलाई 2016 को किया गया है। लोगों के जीवन में खुशी के स्तर को बढोत्तरी के लिए अलग से विभाग गठित करने वाला मध्यप्रदेश देश का ऐसा पहला राज्य है। इसी क्रम में दिल्ली सरकार द्वारा भी वर्ष 2018 से नर्सरी से कक्षा 8 तक के विद्यालयों में एक 45 मिनट का 'हैप्पीनेस' पीरियड प्रारम्भ किया गया है। उत्तराखण्ड में भी वर्ष 2019 से नर्सरी से कक्षा 8 तक के विद्यालयों में इस पाठ्क्रम की शुरूआत की गयी है। हैप्पीनेस पाठ्यक्रम ध्यान, मूल्य शिक्षा, और मानसिक अभ्यास सहित समग्र शिक्षा पर केंद्रित है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में शारीरिक और मानसिक कल्याण के लिए मार्ग प्रशस्त करेगा, गुस्सा, नफरत और ईर्ष्या जैसी नकारात्मक और विध्वंसकारी भावनाओं के चलते पैदा होने वाले संकट का हल करेगा। हैलीवेल (2003) ने खुशी के निर्धारको को ज्ञात करने हेतु किये गये अध्ययन मे यह पाया कि शैक्षिक उपलब्धि जीवन संतुष्टि से निश्चित रूप से प्रत्यक्षतः संबधित नही है किन्तु शिक्षा जीवन संतुष्टि को अप्रत्यक्ष रूप से आय, स्वास्थ्य व सामाजिक सहयोग द्वारा प्रभावित करती है। मनुष्य एक बेहतर

भविष्य के लिए प्रयासरत रहता है शिक्षा इसे किसी न किसी रूप में प्रभावित करती है। शिक्षित व्यक्ति अपेक्षाकृत अशिक्षित व्यक्ति से अपने जीवन को अधिक आनन्दमय एवं सुखी बना सकता है। इसलिए हम कह सकते है कि प्रसन्नता एवं शिक्षा में एक धनात्मक संबंध पाया जाता है जो व्यक्ति जितना शिक्षित होगा उसका प्रसन्न रहने का स्तर अधिक पाया जायेगा।

अतः शोधकर्ता ने उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर को जानने हेतु शोध कार्य करने का निर्णय किया है तथा इस शोध कार्य के माध्यम से उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक चिन्ता एवं निवास के मध्य प्रसन्नता स्तर की स्थिति को जानने का प्रयास किया जायेगा।

समस्या कथन

"ग्रामीण तथा शहरी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर का उनकी शैक्षिक चिन्ता के संदर्भ में अध्ययन।"

अध्ययन के उददेश्य

प्रस्तुत अध्ययन का उददेश्य तथा प्रयोजन यह ज्ञात करना है कि एक विद्याार्थी निवास के आधार पर किस सीमा तक प्रसन्न रहता है। इस अध्ययन के मुख्य उददेश्य हैः–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर का अध्ययन करना।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर में उनके शैक्षिक चिन्ता के संदर्भ में अध्ययन करना।
3. ग्रामीण उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर तथा उनके शैक्षिक चिन्ता के मध्य सह–संबंध का अध्ययन करना।
4. शहरी उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर तथा उनके शैक्षिक चिन्ता के मध्य सह–संबंध का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनायेंक

प्रस्तुत अनुसन्धान के उददेश्यों के आधार पर निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएँ निर्मित की गई हैः–

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की
2. प्रसन्नता स्तर में उनके शैक्षिक चिन्ता के संदर्भ में कोई सार्थक
3. अन्तर नहीं हैं।
4. ग्रामीण उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर तथा उनके शैक्षिक चिन्ता के मध्य कोई सार्थक सह–संबंध नहीं है।
5. शहरी उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर तथा उनके शैक्षिक चिन्ता के मध्य कोई सार्थक सह–संबंध नहीं है।

शोध की परिसीमाऐं

प्रस्तुत शोध अध्ययन में अल्मोडा जनपद के 6 विकासखण्ड अर्न्तगत 25 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 11 व 12 के ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य के उचित क्रियान्वयन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर का अध्ययन करने के लिए विभिन्न शिक्षण संस्थाओं से 850 विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में याद्वच्छित न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया। 850 विद्यार्थियों में 546 ग्रामीण तथा 304 शहरी विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

प्रस्तुत शोध उपकरण

व्यक्तिगत सूचना प्रपत्रः विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्याार्थियों के नाम, लिंग, निवास, कक्षा एवं आयु से सम्बन्धित सूचनायें प्राप्त करने के लिए अनुरोध पत्र का प्रयोग किया गया।

प्रसन्नता मापनीः प्रसन्नता स्तर के मापन के लिए शोधकर्ता द्वारा स्वःनिर्मित उपकरण मापनी का प्रयोग किया गया हैं।

शैक्षिक चिन्ता मापनी: उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का शैक्षिक चिन्ता स्तर ज्ञात करने के लिए विशाल सूद एवं आरती आनंद द्वारा निर्मित शैक्षिक चिन्ता मापनी का उपयोग किया गया है।

सांख्यिकी प्रविधियॉं: प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं पिर्यसन सह–संबंध एवं द्विमार्गीय प्रसरण विश्लेषण का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

उददेश्य 1: उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर का अध्ययन करना।

तालिका 1: उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर का मध्यमान तथा मानक विचलन का विवरण–

चर	न्यादर्श सं0	मध्यमान	मानक विचलन
प्रसन्नता	850	113.148	12.247

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों (N=850) के प्रसन्नता स्तर का मध्यमान 113.148 तथा मानक विचलन 12.247 है। जो कि उच्च प्रसन्नता स्तर को इंगित करता है। अतः उपरोक्त मध्यमान के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का प्रसन्नता स्तर सामान्य से अधिक है।

उददेश्य 2: उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर में उनके शैक्षिक चिन्ता के सन्दर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 2: उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर का उनके शैक्षिक चिन्ता के सन्दर्भ में मध्यमान व मानक विचलन का विवरण–

आश्रित चर	निवास	शैक्षित चिन्ता	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन
प्रसन्नता स्तर	शहरी	उच्च	13	96.00	10.336
		सामान्य	247	111.745	11.886
		निम्न	44	124.954	13.603
	ग्रामीण	उच्च	46	103.782	9.584
		सामान्य	414	112.661	10.817
		निम्न	86	121.081	11.320

उपरोक्त तालिका में उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर में उनके शैक्षिक चिन्ता के संदर्भ में मध्यमान व मानक विचलन को प्रदर्शित किया

गया है। मध्यमान के आधार पर शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययन्रत उच्च शैक्षिक चिन्ता वाले विद्यार्थियों का प्रसन्नता स्तर औसत स्तर का है, तथा सामान्य एवं निम्न शैक्षिक चिन्ता वाले विद्यार्थियों का प्रसन्नता स्तर उच्च स्तर का है।

तालिका 3: उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर में उनके शैक्षिक चिन्ता के संदर्भ में तुलना हेतु द्विमार्गीय प्रसरण विश्लेषण तालिका–

स्रोत	स्वतंत्रता अंश (df)	वर्गो का योग (SS)	मध्यमान वर्ग (MS)	'एफ' (F)	परिणाम
निवास	1	60.128	60.128	0.473	असार्थक
शैक्षिक चिन्ता	2	18854.25	9427.124	74.116**	सार्थक
निवास×शैक्षिक चिन्ता	2	1120.484	560.243	4.405*	सार्थक
समूह के मध्य	6	1090213.25	1817022.04	14285.436	
समूहों के अन्दर	844	107351.75	127.194	–	

**→ 0.01 सार्थकता स्तर।

* → 0.05 सार्थकता स्तर।

उपरोक्त तालिका में उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर में उनके शैक्षिक चिन्ता के संदर्भ में तुलना हेतु द्विमार्गीय प्रसरण विश्लेषण को प्रदर्शित किया गया है।

स्वतंत्रता अंश (1 तथा 844) पर प्राप्त प्रथम स्रोत 'एफ' मान 0. 473 है जो कि 'एफ' तालिका के मान 0.05 सार्थकता स्तर के मान 3.84 से कम है। अतः स्पष्ट है कि शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

स्वतंत्रता अंश (2 तथा 844) पर प्राप्त द्वितीय स्रोत 'एफ' मान 74. 116 है जो कि 'एफ' तालिका के मान 0.01 सार्थकता स्तर के मान 4.60 से अधिक है। यह मान इंगित करता है कि उच्च, सामान्य तथा निम्न चिन्ता स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर में सार्थक अन्तर है।

स्वतंत्रता अंश (2 तथा 844) पर प्राप्त तृतीय स्रोत 'एफ' मान 4. 405 है जो कि 'एफ' तालिका के मान 0.05 सार्थकता स्तर के मान 2.99 से अधिक है। यह मान इंगित करता है कि निवास तथा शैक्षिक चिन्ता की अन्तःक्रिया के कारण उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर में सार्थक अन्तर है।

अतः प्रथम स्रोत मान असार्थक तथा द्वितीय व तृतीय स्रोत मान सार्थक पाये गये है। अतः उपरोक्त शून्य परिकल्पना आंशिक रूप से स्वीकृत तथा मुख्य रूप से निरस्त की जाती है।

उददेश्य 3: ग्रामीण उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर तथा उनके शैक्षिक चिन्ता के मध्य सह–संबंध का अध्ययन करना।

तालिका 4: ग्रामीण उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर तथा उनके शैक्षिक चिन्ता के मध्य सह–संबंध का तुलनात्मक विवरण–

चर	न्यादर्श (N)	स्वतंत्रता अंश (df)	सह–संबंध गुणांक (r)	परिणाम
प्रसन्नता एवं शैक्षिक चिन्ता	546	544	–0.461**	सार्थक

**→ 0.01 सार्थकता स्तर।

परिकल्पना "ग्रामीण उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर तथा उनके शैक्षिक चिन्ता के मध्य कोई सार्थक सह–संबंध नहीं है।" उपरोक्त तालिका में ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर एवं शैक्षिक चिन्ता के मध्य सह–संबंध गुणांक को प्रदर्शित किया गया है। स्वतंत्रता अंश (df=544) पर प्राप्त r का मान –0.461 है जो कि r तालिका में सार्थकता स्तर 0.01 के मान 0.081 से अधिक है। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर एवं शैक्षिक चिन्ता में सामान्य सार्थक ऋणात्मक सह–संबंध है। अर्थात शैक्षिक चिन्ता अधिक होने पर विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर में कमी होती है। अतः उपरोक्त शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

उददेश्य 4: शहरी उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर तथा उनके शैक्षिक चिन्ता के मध्य सह–संबंध का अध्ययन करना।

तालिका 5: शहरी उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर तथा उनके शैक्षिक चिन्ता के मध्य सह–संबंध का का तुलनात्मक विवरण–

चर	न्यादर्श (N)	स्वतंत्रता अंश (df)	सह–संबंध गुणांक (r)	परिणाम
प्रसन्नता एवं शैक्षिक चिन्ता	304	302	–0.533**	सार्थक

**→ 0.01 सार्थकता स्तर।

परिकल्पना "शहरी उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर तथा उनके शैक्षिक चिन्ता के मध्य कोई सार्थक सह–संबंध नहीं है।" उपरोक्त तालिका में शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर एवं शैक्षिक चिन्ता के मध्य सह–संबंध गुणांक को प्रदर्शित किया गया है। स्वतंत्रता अंश (df=302) पर प्राप्त r का मान –0.533 है जो कि r तालिका में सार्थकता स्तर 0.01 के मान 0.128 से अधिक है। अतः स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर एवं शैक्षिक चिन्ता में सामान्य सार्थक ऋणात्मक सह–संबंध है। अर्थात शैक्षिक चिन्ता अधिक होने पर विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर में कमी होती है। अतः उपरोक्त शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष

1. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का प्रसन्नता स्तर सामान्य से अधिक पाया गया है।
2. उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों का प्रसन्नता स्तर सामान्य से अधिक है, किन्तु दोनों क्षेत्रों के विद्यार्थियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। उच्च, सामान्य एवं निम्न शैक्षिक चिन्ता के स्तरों पर विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया है।

उच्च शैक्षिक चिन्ता वाले विद्यार्थियों का प्रसन्नता स्तर कम एवं निम्न शैक्षिक चिन्ता वाले विद्यार्थियों का प्रसन्नता स्तर अधिक पाया गया है। निवास तथा शैक्षिक चिन्ता की अन्तःक्रिया के कारण शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर में सार्थक अन्तर पाया गया है। ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों का प्रसन्नता स्तर शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पाया गया है।

3. ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर एवं शैक्षिक चिन्ता के मध्य सार्थक ऋणात्मक सह–संबंध पाया गया है। अर्थात शैक्षिक चिन्ता में वृद्धि होने पर विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर में कमी आती है।
4. शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रसन्नता स्तर एवं शैक्षिक चिन्ता के मध्य सार्थक ऋणात्मक सह–संबंध पाया गया है। अर्थात शैक्षिक चिन्ता में वृद्धि होने पर विद्यार्थियों की प्रसन्नता स्तर में कमी आती है।

शैक्षिक उपादेयता

प्रस्तुत शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर कहा जा सकता है कि ग्रामीण तथा शहरी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में प्रसन्नता स्तर व शैक्षिक चिन्ता के मध्य नकारात्मक सह–सम्बंध है, अर्थात चिन्ता अधिक होने पर प्रसन्नता स्तर में कमी आती है। विद्यालय में शिक्षकों को व्यक्तिगत रूप से बच्चों पर ध्यान देना चाहिए। विद्यालय में बच्चों का समय–समय पर परामर्श करना चाहिए तथा विद्यालय में ध्यान, योगा इत्यादि गतिविधियों का आयोजन किया जाना चाहिए। विद्यालय में विद्यार्थियों को सीखने में वृद्धि के लिए सुझाव दिये जाये एवं विषय कठिन हो तो अतिरिक्त कक्षाओं का आयोजन किया जाये। विद्यार्थियों के विषय चयन से पूर्व बोर्ड परीक्षा के अंको के आधार पर विषय उपलब्ध कराये जाये जिससे विद्यार्थियों का तनाव कम हो सके। विद्यालय के वातावरण को सोहार्दपूर्ण बनाया जाये। विद्यालय में पर्याप्त रूप से शिक्षकों की व्यवस्था तथा विद्यालय प्रशासन को बच्चो के अनुरूप बनाया जाये। बच्चो के प्रति अभिभावकों की यह जिम्मेदारी है कि वे समय–समय पर अपने बच्चों से बातचीत करें, उनकों प्रोत्साहित करें तथा जरूरत होने पर उनकी सहायता भी करें। वर्तमान समय में उपरोक्त बिन्दुओं में सामजस्य आवश्यक है जिससे भविष्य में मानसिक रूप से सुखमय समाज की स्थापना कर सकें।

सन्दर्भ सूची

1. अग्रवाल के, "सोसल रिसर्च" राजीव साहित्य भवन, एस0बी0पी0डी0 पब्लिकेशन आगरा–282002।
2. रूहेला एस0पी0, "साईकोलॉजी एण्ड सोसियोलॉजी फाउन्डेशन ऑफ ऐजुकेशन " अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा 2।
3. सिंह अरूण के, "रिसर्च मैथडस इन साईकोलॉजी" सोसियोलॉजी एण्ड ऐजुकेशन, मोतीलाल बनसीदास, 41 यू0ए0 बैग्लो रोड, जवाहरनगर दिल्ली 110007।
4. सिंह अरूण के, "एडवान्स जनरल साईकोलॉजी" मोतीलाल बनारसीदास, 41 यू0ए0 बैग्लो रोड, जवाहरनगर दिल्ली 110007।
5. अग्रवाल एंव पुरी (2017) "ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ एडजैस्टमेन्ट एण्ड हैप्पीनैस बिटवीन गर्ल्स एंड ब्वायज" दी इन्टरनेशनल जनरल ऑफ इन्डियन साइकोलोजी, वाल्यूम 4।
6. एन्ड्रयूस व विथे (1976), "सोशल इन्डिकेटर्स ऑफ बेल–विईग" अमेरिकन परसैप्शन आफ लाईफ, क्वालिटि, न्यूयार्क, प्लेनम प्रेस।
7. गुप्ता व अन्य, "एडवान्श ऐजुकेशनल साइकोलॉजी " शारदा पुस्तक भवन, पब्लिकेशन एण्ड डिस्ट्रीब्यूशन्स, यूनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद।
8. कॉल लोकेश (1997), "मेथोलॉजी आफ एजुकेशन रिसर्च, विकास पब्लिशिंग हाउस, प्राईवेट लि0, नोयडा।
9. मैकवे एवं अन्य (2009) "प्रोमोटिंग हैप्पीनेस एण्ड लाईफ सैटिस्फैक्शन इन स्कूल चिल्ड्रन" कनेडियन जनरल ऑफ स्कूल साइकोलॉजी, वाल्यूम 26(3),पृ0 177–192।
10. प्रतियोगिता दर्पण (2016) "मध्य प्रदेश हैप्पीनेस डिपार्टमेन्ट का गठन करने वाला देश का पहला राज्य" राज्य समाचार, सितम्बर, पृ0 41।
11. https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-analysis/world-happiness-report-2016,2018, 2020.
12. https://www.dw.com/hi/प्रसन्नता-दिवस-पर-संयुक्त-राष्ट्र- की-पहल /.1832993₁.
13. https://khabar.ndtv.com/news/career/delhi-goverment-launched-happiness-curriculum-course-for-government-schools-1877297.
14. https://www.aajtak.in/education/story/happiness-curriculum-will-be-start-in-uttrakhand-and-andhra-pradesh-like-delhi-government-tedu-648336-2019-03-27.